फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

मेरे जीवन में शिक्षकों की भूमिका

– मीनाक्षी आर्य

'मुझे लगता है, मेरे सभी शिक्षक मेरे जीवन में एक आदर्श रूप में हमेशा मौजूद रहेंगे। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व, उनकी कर्तव्यनिष्ठा, उनके पढ़ाने के तरीके आज भी मेरे अंदर उत्साह का संचार कर देते हैं।'

मेरे विद्यालयी जीवन की शुरुआत नैनीताल जिले के एक ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय से हुई। उस विद्यालय में मेरी मम्मी सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत थीं। मुझे याद है उस समय हम तख्ती पर लिखा करते थे। तख्ती को साफ करना उस पर टॉर्च या रेडियो के सेल को कूटकर काले चूरे को निकालकर उसकी कालिख को पानी में मिलाकर कपड़े से तख्ती पर लगाना और उसे सुखाकर उसमें एक शीशी से घोटा लगाना। यह हमारे प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल था। बहुत बार ऐसा होता था तख्ती पर लिखने के दौरान मैं अपने कपड़े भी गंदे कर लेती तो मम्मी की डांट पड़ती और कभी–कभी पिटाई भी हो जाती लेकिन थोड़ी देर में उस डांट–पिटाई को भूल कर फिर मस्त हो जाते थे।

घोटा लगाने के बाद तख्ती चमक उठती थी। तख्ती पर सीधी लाइन बनाने का काम मम्मी का होता था। लाइनें बनाने के लिए एक मोटे से धागे का इस्तेमाल होता था। लाइनें भी कुछ विशेष प्रकार की होती थीं जैसे कि आजकल हम छोटे बच्चों की हिंदी की कॉपी में देख सकते हैं। दो लाइनें कम दूरी पर और तीसरी लाइन अधिक दूरी पर होती थी जिससे अक्षर और मात्राएं लगे अक्षरों को सही तरीके से लिखा जा सके। यह भाषा सीखने के केन्द्र में भी था। तख्ती पर हम कलम से लिखते थे और कलम रिंगाल से बनती थी। तख्ती पर कलम से लिखने के लिए मिट्टी का इस्तेमाल होता था जो कि चट्टान से खोदकर निकाली जाती गांव के अन्य बच्चे जो स्कूल में पढ़ते थे वह मिट्टी खोदकर लाते और उसे पानी में घोलकर एक सफेद रंग का घोल तैयार होता जिसे कमेट कहते थे। उस घोल से कलम की मदद से हम तख्ती पर लिखा करते थे।

तीसरी कक्षा तक हम अधिकतर कार्य तख्ती पर ही किया करते थे। शायद हमारे लेख को सुंदर बनाने के लिए यह कार्य किया जाता था और इसका मकसद सुंदर लिखावट को विकसित करना भी हो सकता होगा। चौथी व पांचवी में हम सभी काम कॉपी में करते थे लेकिन कॉपियों में भी कलम और स्याही जो कि टिकिया या पाउडर के रूप में होती थी इससे ही लिखते थे। एक विशेष कॉपी सुलेख के लिए होती थी जिसमें हमें अपने सुंदर लेख में एक वाक्य प्रतिदिन हमारी मैडम लिख कर देती, और हम उसे पूरे पेज पर लिखते थे। तीसरी कक्षा तक स्वर, व्यंजन, गिनती और पहाड़ों को याद करवाने पर विशेष जोर दिया जाता था। मुझे लगता यह प्रक्रिया आगे भी काफी चलती रही और इसकी कुछ छाप अभी भी शिक्षकों के बीच

दिखाई ही पड़ जाती है। ऐसा मुझे कभी–कभी लग जाता है।

एक बार मुझे याद है हमारी मैडम। मम्मी ने पूरी कक्षा को पहाड़े याद करने के लिए दिए। मैंने भी पहाड़े याद किए लेकिन जब मेरा पहाड़े सुनाने का नंबर आया तो मैं चौदह के पहाड़े में अटक गई। मम्मी ने मुझे दो चांटे मारे और बाहर फील्ड में मुर्गा बनाकर धूप में बैठा दिया और दोबारा याद करने को कहा और मैंने रोते–रोते पहाड़ा याद किया था। मुझे ऐसा भी कुछ याद नहीं कि पढ़ाई में यदि कुछ समझ में न आ रहा हो तो हमें कुछ अलग तरीके से पढ़ाया गया हो। मुझे लगता है पढ़ाई में समझ बनाने की उस समय बहुत जगह नहीं थी। गणित में चार संक्रियाएं– जोड़, घटाना, गुणा और भाग करना। हिंदी में पाठों को पढ़ना और दिए गए अभ्यास कार्य को ब्लैक बोर्ड से उतारना बस यही कक्षा का नियमित कार्य था। पाठ्य पुस्तकों के अलावा कोई नई या अलग कविता हमें कोई नहीं सिखाता था। परंतु इस नियमित अभ्यास से पांचवी कक्षा उत्तीर्ण करते–करते हमें पाठ्य पुस्तकों से अधिकतर चीजें पढ़ना और लिखना आ गया था। हाँ , आज के दृष्टिकोण से इसे पढ़ना–लिखना माना जाएगा या नहीं इस पर हम सब विचार कर सकते हैं क्योंकि आज हम जब शिक्षक प्रशिक्षणों में जाते हैं तो पढ़ने में समझ, अभिव्यक्ति और बच्चों में पढ़ने में रुझान आदि की बातें की जाती हैं। और हम सबको अपनी पुरानी बातें याद आती हैं कि हम सब तो ऐसे ही पढ़ना सीख गए थे। ऐसे हम एक द्वंद्व में फँस जाते हैं और कहीं वर्तमान समय को भूल जाते हैं कि आज हम शिक्षा को कैसे देखते हैं? और पहले कैसे देखते थे? मुझे लगता है इस पर हमें सतत विचार करना चाहिए। प्राथमिक कक्षाओं में उस समय हमें अंग्रेजी नहीं पढ़ाई जाती थी। अंग्रेजी हमने छठी कक्षा में सीखी। छठी कक्षा में आकर ए, बी, सी, डी ... सीखना , अपने नाम की स्पेलिंग याद करना आदि कार्य होता था।

आगे की पढ़ाई राजकीय बालिका इंटर कॉलेज नैनीताल में हुई जहां पर छठी कक्षा में प्रवेश लेने के लिए हमारी प्रवेश परीक्षा ली गई थी। वहां पर हजारों की संख्या में लड़कियां पढ़ती थी उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे शहर की सारी लड़कियां हमारे ही कॉलेज में आ गई हो। उस समय उत्तराखंड के कॉलेज उत्तर प्रदेश के शिक्षा बोर्ड से ही जुड़े हुए थे। कई अभिभावक नवीं कक्षा में भी अपने बच्चों का दाखिला हमारे कॉलेज में करवाते थे। हमारे कॉलेज में सभी वर्गों के बच्चे एक साथ पढ़ते थे। आज की परिस्थितियों में तो देखने को मिलता है केवल गरीब का बच्चा ही सरकारी विद्यालय में पढ़ता है।

छठी से बारहवीं तक के कॉलेज का समय मेरे लिए सुनहरा समय रहा क्योंकि उस समय मुझे लगता था हमारे कॉलेज में सभी अध्यापिकाएं एक से बढ़कर एक हैं। उनकी अमिट छाप आज भी मेरे मन मस्तिष्क पर बनी हुई है उन्होंने हमें कई बातें सिखाई और उनके पढ़ाने के सभी तरीके अलग–अलग थे लेकिन रोचकता से भरपूर होते थे। मुझे लगता है उनके शिक्षण से प्रभावित होकर ही मैं शिक्षक बनने के लिए प्रेरित हुई। इसके अलावा मुझे लगता है इस कॉलेज के प्रत्येक अध्यापक – अध्यापिका मेरे लिए प्रेरणास्रोत रही हैं। मैं इनमें से दो शिक्षकों का और जिक्र करना चाहूंगी जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा है।

सर्वप्रथम मैं अपनी गणित और विज्ञान विषय की अध्यापिका श्रीमती सुनीता पांडे मैडम के बारे में बताना चाहूंगी। उन्होंने गणित और विज्ञान विषय हमें छठी से आठवीं तक पढ़ाया। उनका पढ़ाने का तरीका इतना रुचिकर एवं मजेदार होता कि सीखने में बहुत मजा आता था बल्कि मन करता था कि सुनीता मैडम हमें पढ़ाती ही रहें। वे गणित जैसे कठिन विषय को भी वे बड़ी ही रोचक ढंग से पढ़ाया करती थीं। वे गणित के सवालों को बार–बार अभ्यास करने को कहा करती थी। उन्होंने हमसे गणित की मोटी सी रफ कॉपी भी बनवाई थी। मुझे अच्छे से याद है वह कहती थीं कि पहले सवालों को कॉपी में पेंसिल से हल करो, प्रैक्टिस करो और जब कॉपी भर जाए तो उसी के ऊपर या उसे मिटा कर तुम पेन से सवालों को हल कर सकते हो। मजे की बात यह थी कि वह रफ कॉपी को भी चेक किया करती थीं। कागज का सही उपयोग करना, कॉपी को फाड़ना नहीं चाहिए यानी पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का गुण उन्होंने हमारे भीतर विकसित कर दिया था। हालाँकि आज मुझे यह लगता है कि गणित शिक्षण में पहले अभ्यास की बात की जाती थी आज अवधारणाओं को समझने की बात होती है। इसे हमें ध्यान में रखना होगा।

विज्ञान पढ़ाने में वे अधिकतर हमें लैब में ले जाया करती और जितना अधिक हो सकता वे प्रदर्शन विधि के द्वारा हमें समझाने का प्रयास करती थीं जबकि आज बच्चों के

द्वारा प्रयोग करके सीखने की बात होती है। एक बार की घटना मुझे याद है कि पौधों की पत्तियों तक कैसे पानी पहुंचता है ? इसको समझने के लिए उन्होंने एक साधारण सा प्रयोग करके कक्षा में दिखाया। एक परखनली में उन्होंने पानी में पोटेशियम परमैगनेट घोला और उसे रंगीन पानी में एक पौधा डाल दिया उसे उन्होंने सुबह से ही धूप में कुछ घंटों के लिए रख दिया कुछ समय बाद हमने देखा पौधे के तने और शाखाओं में लाल रंग की बारी धारियां सी दिखाई दीं। यह धारियां दिखा रही थीं कि वह लाल पानी पौधे के प्रत्येक भाग तक पहुंच रहा है। इस प्रकार उन्होंने पौधे द्वारा जल अवशोषण को बड़ी सरलता से हमें दिखा दिया। आगे की कक्षाओं में जब मैंने स्वयं प्रयोग करके वनस्पति विज्ञान में पौधों के आंतरिक भागों के विषय में अध्ययन किया और सभी क्रियाएं यथार्थ में होते हुए देखीं तो हमेशा अपनी मैडम को याद किया। इसी प्रकार कई पौधों में वाष्पोत्सर्जन की क्रिया इंद्रधनुष का बनना आदि भी बड़ी सहजता से उन्होंने हमें बताया था जो मुझे आज भी याद है। सुनीता मैडम एक अच्छी लेखिका भी थीं। एक बार पर्यावरण से जुड़ी एक सामूहिक गतिविधि के दौरान उन्होंने हमारे समूह से एक नाटक भी तैयार करवाया था और नाटक के लिए एक समूह गान उन्होंने लिखा था जिसके कुमाऊँनी भाषा में बोल कुछ इस प्रकार थे–

मनुष जाता सुणया मुणिहो वृक्षन की यौ विपदी का हाल
हम निरुणों पैं क्यों कर ला .....

अपनी इन मैडम से मेरी पुनः मुलाकात आगे फिर हुई जब मैं टीईटी का पेपर देने गई तब वे उस कॉलेज में प्रधानाचार्य बन गईं थी। इतने लंबे समय अंतराल के बाद भी उनकी गतिविधियों को देखकर लग रहा था कि उनमें अपने कार्य के प्रति कितना जोश है एवं उत्साह है। मुझे अपनी मैडम से मिलकर बहुत खुशी हुई थी वह मेरी अध्यापिका थी और उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। वे अपने प्रत्येक विद्यार्थी को भी समझतीं थी हम बड़ी ही आसानी से अपनी समस्या उनसे कह देते थे और हमें लगता था कि हमारी सभी समस्याओं का हल हमारी मैडम के पास मौजूद है।

अब मैं अपने कॉलेज का सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व श्रीमती भगवती बिष्ट मैडम के बारे में बताती हूँ जो कि उस समय हमारे कॉलेज की प्रधानाचार्य थी। वे समय की बहुत पाबंद थी कि हमेशा नियत समय से पहले ही विद्यालय पहुंच जाती हमेशा प्रार्थना सभा में सम्मिलित होती और बारीकी से निरीक्षण करती। वह हमेशा हम सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती थीं। वह हमसे कहती थीं कि लड़कियों को मजबूत बनना चाहिए। अनुशासन का जिक्र भी हमेशा उनकी बातों में होता। उनके लिए अनुशासन का तात्पर्य समय का पालन करने, अपना कार्य को समय से करने, अपने से बड़ों का सम्मान करने, साफ–सफाई पर ध्यान रखने तथा माता–पिता का कहना मानने आदि बातों से होता। उन्हें स्व–अनुशासन में रहना बहुत प्रिय था। वे हमेशा कहा करती थीं कि अच्छी आदतें अपने अंदर डालोगे तभी बड़े होकर अच्छे इंसान बनोगे। सभी उनकी बातें मानते थे जिससे ऐसा लगता था कि वह हर जगह से हमें देख रही हों। धीरे–धीरे उनकी बातें कब मेरी आदतों में शुमार हो गई मुझे खुद पता नहीं चला। आज मुझे लगता है कि अगर इस तरह की बातें बच्चों से कही जातीं है तो इसका बच्चों पर बहुत प्रभाव नहीं पड़ता।

मुझे लगता है मेरे सभी शिक्षक मेरे जीवन में एक आदर्श रूप में हमेशा मौजूद रहेंगे। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व , उनकी कर्तव्यनिष्ठा उनके पढ़ाने के तरीके आज भी मेरे अंदर उत्साह का संचार कर देते हैं। मैं सौभाग्यशाली हूं कि इतने अच्छे अध्यापकों का योगदान मेरे जीवन में रहा है और उनसे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रही है। अगर उनकी प्रेरणा से मैं उनसे सीखे हुए का आधा भी अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में विकसित कर पाऊं तो मुझे खुशी मिलेगी। ऐसा मैं सोचती हूँ। इसके साथ ही आज जब मैं शिक्षक प्रशिक्षणों में प्रतिभाग करती हूँ और वहाँ की चर्चाएं सुनती हूँ तो मन में यह सवाल भी उभरता है कि आज जब हम एन.सी.एफ.–2005 के दस्तावेज की बात करते हैं तो इस संदर्भ में अच्छे शिक्षक के मायने क्या हैं ? इसमें हम अपने विद्यालय के दिनों के शिक्षकों से क्या बातें सीख सकते हैं? और आज के संदर्भ में हमें और क्या सीखना– समझना जरूरी है? इस पर हम सबको मिलकर विचार करना होगा।

(लेखिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, महराया, रुद्रपुर, ऊधमसिंह नगर में शिक्षिका हैं)